रविवारीय

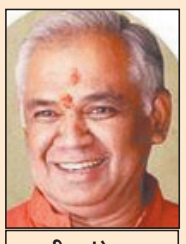

राजीव खंडेलवाल
(लेखक वरिष्ठ कर सलाहकार एवं पूर्व सुधार न्यास अध्यक्ष हैं)

ट्रंप का दूसरा कार्यकाल का ''व्यक्तित्व'' उनके पहले कार्यकाल की तुलना में बदला-बदला सा दिख रहा है. ''चौदहवीं का चांद'' फिल्म का यह गाना याद आ जाता है. ''बदले-बदले से मेरे सरकार नजर आते है''. इस बदलते व्यक्ति को जितनी भी उपाधियों से नवाजा गया, शायद शब्द कम पड़ गये. इस मामले में उन्होंने युगांडा के अमीन को भी पीछे छोड़ दिया, जिसे सनकी कहा जाता रहा. ''घमंडी'', ''जरूरत से ज्यादा आत्मविश्वासी'' ''अनिश्चित, ''बेशर्म'', ''बदतमीज'', ''झूठा'', ''पलटूराम'' शब्द कम पड़ रहे हैं. ट्रंप का दूसरा कार्यकाल तुलनात्मक रूप से ज्यादा अप्रत्याशित व अनिश्चित नीति का ज्यादा शिकार रहा है. बावजूद उन्होंने अभी भी ''अमेरिका फर्स्ट नीति'' को केन्द्र बिन्दु बनाया हुआ है.

ऐसा कोई सगा नहीं जिसे ट्रंप ने ठगा नहीं

ट्रंप के दूसरे कार्यकाल में उन्हें दी गई उपाधियां उनकी विवादास्पद शैली, नीतियों के वैश्विक प्रभाव को दर्शाती हैं. समर्थक उन्हें ''सीजफायर एक्सपर्ट'', ''स्वर्ण युग का प्रणोता'', और ''अमेरिका फर्स्ट का योद्धा'' जैसे सकारात्मक नामों से पुकारते हैं, जबकि आलोचक ''तानाशाह राष्ट्रपति'', ''झूठ का बादशाह'' और ''टैरिफ किंग'' जैसे नकारात्मक नामों का इस्तेमाल करते है. ये उपाधियां सामाजिक, राजनीतिक, और वैश्विक ध्रुवीकरण को दर्शाती हैं, जो ट्रंप की छवि का अभिन्न हिस्सा है.

ट्रंप की 150 दिनों से ज्यादा के कार्यकाल की यात्रा के व्यक्तित्व को वर्णित करने में जुबान की कीमत ''पल में तोला, पल में माशा'' बदलने वाले व्यक्ति ट्रंप के सामने जुबान की कीमत नहीं है. उक्त डिग्रियों के धारक ट्रंप का इजरायल-ईरान के बीच युद्ध विराम की घोषणा, कब युद्ध में पुन: बदल जाए, इसकी गारंटी नहीं है. विश्व के सबसे शक्तिशाली देश का प्रेसिडेंट का ऐसा व्यक्तित्व भी हो सकता है, वह कल्पना से परे है. बावजूद इसके इस बात के लिए लोहा मानना होगा, बल्कि माना जा रहा है कि ट्रंप की सभी बाते कार्रवाईयों को विश्व आगे-पीछे, सामने परदे के पीछे किसी न किसी भी रूप में पालन करने में मजबूर हैं. ट्रंप सब विरोधाभासों के बावजूद अपने देश में इसीलिए सफल होता है उसका एक बड़ा समर्थक है, जो ''अमेरिकन फर्स्ट'' की नीति के नाम पर ट्रंप का समर्थन कर रहा है. अमेरिका के हर शहर में विरोध के बावजूद ट्रंप के चेहरे पर शिकन तक नहीं. उसका सबसे बड़ा एक कारण कार्य प्रकृति है उसमें वह किसी भी नीति, कार्य के प्रति वह अड़ने वाला व्यक्ति नहीं है. जब चाहे वह अपने निर्णयों से पलट जाता है और फिर पलट कर लागू कर देता है. मतलब धमकी के साथ लचीलापन नीतियों को लागू करने पर स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होती है.

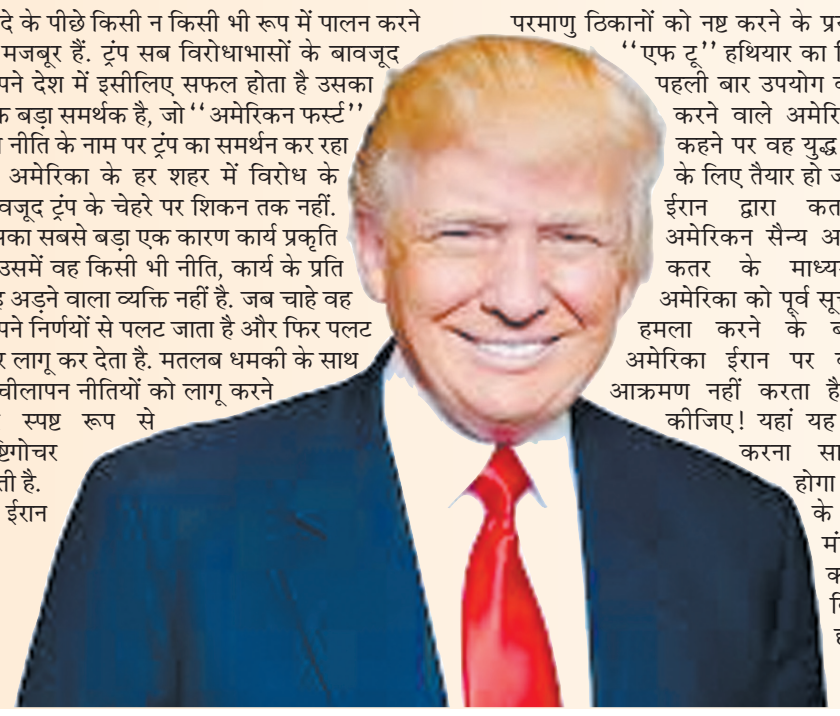

ईरान के परमाणु ठिकानों को नष्ट करने के प्रयास में ''एफ टू'' हथियार का विश्व में पहली बार उपयोग कर नष्ट करने वाले अमेरिका के कहने पर वह युद्ध विराम के लिए तैयार हो जाता है. ईरान द्वारा कतर में अमेरिकन सैन्य अड्डों पर कतर के माध्यम से अमेरिका को पूर्व सूचना के हमला करने के बावजूद अमेरिका ईरान पर काउंटर आक्रमण नहीं करता है. याद कीजिए! यहां यह उल्लेख करना सामयिक होगा भारत के विदेश मंत्री ने कहा था कि हमने ऑपरेशन सिंदूर प्रारंभ करने के पूर्व पाकिस्तान की सेना को बताया था कि हम सेना पर कोई कार्रवाई नहीं करेंगे, सिर्फ आतंकियों के विरुद्ध आतंकी बेसों पर ही सैन्य कार्रवाई करेगें. पर तब हमारे देश में बहुत चिल्लाहट हुई. लेकिन यही नीति जब ईरान ने अमेरिका के खिलाफ कतर के माध्यम से अमेरिका को सूचना देकर उनके परमाणु ठिकानों पर हमला किया, तब इस पर किसी ने आपत्ति नहीं की. बल्कि इसे ईरान की युद्ध न भडकाने की नीति कहकर सराहा गया. लेकिन भारत में विपक्ष ने सराहा नहीं. यह युद्ध व युद्ध विराम इतना विचित्र है जो सिर्फ ईरान-इजराइल व अमेरिका को ही आश्चर्य में नहीं ड़ालता है, बल्कि पूरे विश्व को आश्चर्यचकित करता है. जहां तीनों पक्ष जीत का दावा करते है. युद्ध विराम के लिए सहमत होते है. क्रिकेट व हॉकी के मैच में या तो जीत, या हार या ड्रा होता है, लेकिन दोनों पक्ष न तो जीतते है न हारते है. यह कमाल इस युद्ध के खेल में ही संभव है.

इजराइल ने युद्ध प्रारंभ किया, ईरान पर आक्रमण करके तब ईरान ने यह कहा था कि युद्ध इजरायल ने प्रारंभ किया, लेकिन समाप्त हम करेंगे. इसी बीच अमेरिका उसमें कूद पडा और कूद कर बंम फोड़कर शांति करवाई. इसके लिए वह अब नोबेल शांति पुरस्कार की बात कर रहा है. यह भी विश्व का आठवां आश्चर्य होगा. नोबेल शांति पुरस्कार के लिए पहले दो देश को लडवाओं फिर ''इंधन'' दो और कुछ समय बाद वहीं पंच बनकर दोनों की कॉलर पड़कर गोलियां बंद करवाये. फिर कहे मैंने युद्ध रूकवाया है, मुझे शांति पुरस्कार दे.

> वास्तव में ट्रंप की कार्रवाईयों ने विदेश नीति के जितने जानकर, विवेचक व समालोचक आलोचक है, उनकी बुद्धि को ''360 डिग्री से घुमाकर'' ''घुमते रहने'' पर मजबूर कर दिया है, वह स्थिर ही नहीं रह पा रही है. एक लॉजिक निकालते है. दूसरे क्षण ट्रंप अपनी कार्रवाईयों से उसे ध्वस्त कर देते हैं. भारत भी ट्रंप के इस विचित्र व्यवहार से हक्का-बक्का होकर अचभिंत हैं. ट्रंप की इन 150 दिनों में न्यूनतम 10 कार्रवाई भारत के सम्मान के खिलाफ हुई उसका सक्षम प्रतिरोध भारत नहीं कर पाया. अधिकतर मामलों में चुप्पी साध ली. पूरे विश्व को यदि वास्तव में शांति क्षेत्र बनाये रखना है, पूरे विश्व को ट्रंप के मामले में अपनी नीति का पूर्वावलोकन करना अति आवश्यक है और उसके कथनों पर ध्यान न दिया जाकर उसके द्वारा की जा रही कार्रवाई को ध्यान में रखकर यदि विश्व ट्रंप के प्रति अपना रवैया निश्चित करेगा, तभी ट्रंप को कुछ नियंत्रित किया जा सकता है. अन्यथा ट्रंप के अपने शेष कार्यकाल में वह धमा-चौकडी मचायेगा, इसकी कल्पना कोई भी विशेषज्ञ नहीं कर सकता है.

व्यंग्य

अंतरिक्ष केंद्र यात्रा पर नेताओं का रिएक्शन

रवि उपाध्याय
लेखक व्यंगकार और राजनीतिक समीक्षक हैं)

एस्ट्रोनॉट शुभांशु शुक्ला द्वारा अंतरिक्ष स्टेशन पर उतरने पर सारे देश में हर्ष और उत्साह की लहर है. यह सुखद है कि अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन पर पहली बार भारतीय एस्ट्रोनॉट शुभांशु शुक्ला अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन पर पहुंचे हैं. इसके पहले 1984 में राकेश शर्मा पहली बार अंतरिक्ष में गए थे. लेकिन शुभांशु अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन पर पहुंचने वाले भारत के पहले एस्ट्रोनॉट हैं. बताया जाता है कि इसके लिए भारत सरकार ने उनकी ट्रेनिंग पर 60 मिलियन डॉलर करीब 5000 करोड़ रुपए दिए हैं.

इस ऐतिहासिक घटना के बाद देश के साथ हमारे छेदीलाल जी भी बहुत आनंदित थे. उन्होंने तय किया कि इस खुशी पर देश की विभिन्न पार्टियों के नेताओं से रिएक्शन लिया जाए. छेदी लाल जी का यह मानना था कि वे किसी भी राजदीप से कम नहीं हैं. वे खुद नेताओं से भेद निकलवाने में चैंपियन हैं. उनका मानना है कि वे सामने वाले के मन में छेद कर उनके पेट में छुपी हुई बात उगलवाने में उस्ताद हैं. अन्य कुछ पत्रकारों की तरह उनको भी यह गुमान है कि वे खबर नबीसों के खली-बली हैं. इस विशेषता से लैस वे माइक उठा कर ऑस्ट्रेलिया रिटर्न नेता जी के पास जा पहुंचे. नमस्कार, चमत्कार के बाद उनसे उत्तरप्रदेश के ही सपूत शुभांशु को मिली अभूतपूर्व सफलता को लेकर रिएक्शन पूछा तो वे बोले, अच्छी बात है, उनको भी बधाई और आपको भी बधाई. रही बात हमारी तो आज कल ये लोग विपक्ष को विश्वास में कब लेते हैं. रही बात अभूतपूर्व बताने की तो इंदिरा गांधी के जमाने में 1984 में राकेश शर्मा, शुभांशु शुक्ला से पहले अंतरिक्ष में हो आए हैं. वे भी ब्राह्मण थे और ये भी ब्राह्मण है. यह ठीक नहीं हैं. इस बार पीडीए के किसी व्यक्ति को भेजा जाना चाहिए था. अब ब्राह्मणवाद नहीं चलेगा. छेदीलाल बोले वे एयरफोर्स के ट्रेंड कुशल पायलट हैं.

नेताजी भड़क गए बोले कुशल तो कोई भी बन सकता है. जिसे प्रोत्साहन दोगे अच्छी ट्रेनिंग दोगे वह अंतरिक्ष तो क्या समुद्र में भी चला जाएगा. लेकिन ये भाजपाई और मोदी जी पिछड़ा वर्ग, दलित और अल्प संख्यक विरोधी हैं. मोदी जी यह जानते हैं कि ये वर्ग उनको वोट नहीं देता. इसलिए भाजपा उनके साथ दोयम दर्जे का व्यवहार करती है. हम केंद्र की सत्ता में आए तो हम, इन वर्गों की तक़दीर और तदबीर बदल देंगे. तब हम हर साल पिछड़ा, दलित और मुस्लिम को अंतरिक्ष में भेजेंगे. ये वादा रहा हमारा.

नेताजी बोले - रही बात कुशलता की, तो हम मिसाल हैं, मिसाल. हम देश के सबसे कमसफल सीएम भी रहे हैं. बाबा ने तो बेड़ा गर्क कर दिया यूपी का. नेताजी ने हम पर भरोसा किया हमने चुनाव में नेताजी के समय से भी ज्यादा विधायक जिता कर समाजवादी सरकार बनाई.

छेदीलाल ने पूछा नेताजी तो क्या आप यूपी के अगले विधानसभा चुनाव के बाद किसी पीडीए के व्यक्ति को सीएम बनाएंगे ? नेताजी ने पहलू बदल कर कहा देखो पीडीए में जो %पी% अक्षर है वह पहले है . वह पिछड़े वर्ग के लिए समर्पित है. सीएम तो उसी के लिए रिजर्व है. छेदी बोले तो फिर पीडीए से सीएम उम्मीदवार ... छेदीलाल अपना सवाल पूरा कर पाते कि नेता जी, छेदी बाबू की बात बीच में काट कर तपाक से बोल पड़े- अरे भाई हम भी पिछड़ा हैं, हम ही बनेंगे . हम क्या घांस छीलेंगे. अच्छा नमस्ते. हमको कहीं ओर जाना है. यह कह कर नेताजी उठ कर खड़े हो गए.

इसके बाद छेदी भाई इंडिया ब्लॉक के बॉस के यहां जा धमके. उनके निवास के बाहर वाले कमरे में पार्टी अध्यक्ष से मुलाकात हो गई. हमने रिएक्शन मांगा तो वह बोले असली हाईकमान का रिएक्शन लेते खैर बात कर के बताते हैं. उनसे बात के बाद अध्यक्ष जी बोले देखिए शुभांशु जी के अंतरिक्ष जाने पर हम सब खुश हैं. लेकिन इसके लिए सर्वदलीय बैठक में अंतरिक्ष भेजे जाने वाले का नाम तय होना चाहिए था. हम इस मुद्दे पर संसद का विशेष सत्र बुलाने की मांग करते हैं. यह मुद्दा संसद के सत्र में उठाएंगे.

उसी बीच पार्टी के सबसे बड़े युवा नेता आए. पार्टी अध्यक्ष ने हाथ जोड़कर उनका अभिवादन किया. युवा नेता ने छेदी बाबू से पूछा कैसे ? छेदी के पहले अध्यक्ष जी बोले अंतरिक्ष यात्रा पर आपका रिएक्शन लेने आए थे . युवा नेता उखड़े-उखड़े से बोले -नाम बताओ, मालिक का नाम बताओ, अपनी जात बताओ. छेदी ने कहा सर, आप ही की तरह मेरा भी दत्तात्रय गोत्र का हूं, प्योर दत्तात्रय. रही बात मेरे मालिक की तो आपने यह सुन रखा होगा कि सबका मालिक एक ही होता है, इसलिए आपके सभी समर्थकों की तरह मेरे मालिक भी आप ही हैं.

युवा नेता यह सुनकर पुरानी फिल्मों के विलेन लायन सफेद पोश अजीत की तरह मुस्कराए और बोले स्मार्ट बॉय. उन्होंने पूछा चुनाव लड़ोगे ? छेदी बाबू बोले सर मैं पत्रकार ही बने रहना चाहता हूं. हां आशुतोष तैयार हो जाएंगे. वह बोले वो पुराना आपिया ? नो-नेवर. छेदीलाल के नवनीत लेपन पर युवा नेता गदगदायमान हो गए और बोले पूछो छेदीलाल . छेदी ने शुभांशु के अंतरिक्ष गमन पर सवाल किया . वे बोले इसका श्रेय हमारी सरकारों को जाता है. 1984 में इंदिराजी ने राकेश शर्मा को भेजा. हम सत्ता में आने पर पिछड़ा और दलित वर्ग को आगे बढ़ाएंगे. इसरो हमने ही बनाया. तभी शुभांशु अंतरिक्ष केंद्र में जा सके. हम इसरो में पिछड़ा, दलित और मुसलमानों को भेजेंगे. आज वहाँ इनके पद शून्य हैं. चलो अब ठीक है ओके. उन्होंने ने अध्यक्ष जी से कहा कि इनको चाय वाय पिला दीजिए. इतना कह वह अंदर चले गए.

छेदी बाबू जब कांग्रेस दफ्तर से बाहर निकल रहे थे तो जयराम मिल गए .बोले कैसे ? हम बोले दर्शन करने . इसके आगे वो कुछ और बोलते छेदी बाबू जय राम जी बोल कर कट लिए. वहां से वे लालूजी से मिले. हमने रिएक्शन मांगा तो बोले. इसमें कोनो बड़ी बात है .सब जाता है वो भी गया. हुड़थ वो तो हमारा उमर ज्यादा हो गया है वरना हम भी अंतरिक्ष में चला जाता. फिर भी वो सुधांशु को बधाई . हमने कहा लालूजी, सुधांशु नहीं वो शुभांशु है. लालू जी बोले, ऐ - छेदीलाल बा . जबान क्यों पकड़ता है भाई. शुभांशु हो या सुधांशु दोनों बात एकही हैं. दोनों ही ब्रह्मानवा है. ये मोदी- मोहन और भाजपा तीनों के तीनों पिछड़ा विरोधी हैं . बिहार के चुनाव में हम इन्हें गाजर-मूली सा उखाड़ फेकेंगे.

केजरीवाल जी गुजरात से लौटे थे .छेदी बाबू ने उनसे आतिशी के बंगले पर भेंट की आधा घंटे के इंतजार के बाद ही मुलाकात हो सकी. शुभांशु की सफलता पर केजरीवाल ने कहा उन्हें हमारी शुभकामनाएं और बधाई. वो पढ़ा लिखा आदमी है. प्रधानमंत्री तो पढ़ा लिखा आदमी ही होना चाहिए. तभी पास में बैठा एक व्यक्ति बोला केजरीवाल जी आई आई टियन.

डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी : भारत की एकता के अमर प्रहरी

हेमन्त खण्डेलवाल

जन्मदिवस पर विशेष

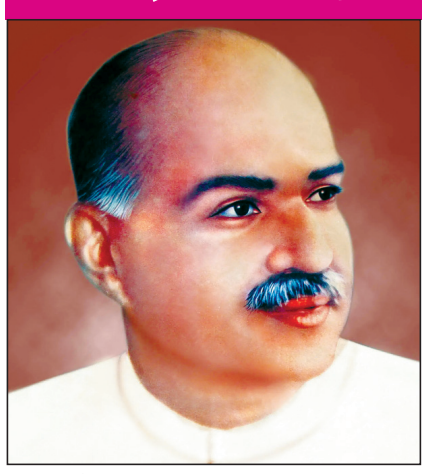

कुछ व्यक्तित्व ऐसे होते हैं, जो अपने विचारों, संघर्षों और बलिदानों से समय की धारा को मोड़ने का संकल्प रखते हैं. डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी ऐसे ही युगपुरुष थे, जिनकी राष्ट्रभक्ति, दूरदृष्टि और दृढ़ संकल्प ने भारत की एकता-अखंडता को सुदृढ़ किया. डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी ऐसे ही एक युगद्रष्टा थे, जिनका जीवन भारत की एकता, अखंडता और संप्रभुता के लिए समर्पित था. वे केवल एक राजनेता नहीं, बल्कि शिक्षाविद, समाज सुधारक और सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के प्रबल प्रवक्ता थे. 6 जुलाई को उनका जन्मदिवस केवल एक स्मरण तिथि नहीं, बल्कि राष्ट्रनिष्ठा, त्याग और सिद्धांतों के प्रति प्रतिबद्धता का प्रतीक है.

देश की स्वतंत्रता के पश्चात जम्मू-कश्मीर को लेकर जो परिस्थितियाँ निर्मित हुईं, वे राष्ट्र की एकता के लिए चुनौती बन गईं थी. अनुच्छेद 370 और 35ए जैसे प्रावधानों ने जम्मू-कश्मीर को भारत से पृथक करने का प्रयास किया. डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने इस वैचारिक विभाजन का डटकर विरोध किया. उनका स्पष्ट मत था कि एक देश में दो प्रधान, दो विधान और दो निशान नहीं चल सकते. यह केवल एक नारा नहीं, बल्कि उनका जीवन दर्शन था. उन्होंने कहा था कि जब कश्मीर भारत का अभिन्न अंग है, तो वहाँ भी भारत के समान संविधान और शासन होना चाहिए. अपने इस सिद्धांत को सत्य सिद्ध करने के लिए उन्होंने अपना जीवन न्यौछावर कर दिया. उनका बलिदान व्यर्थ नहीं गया, वर्षों बाद उनका सपना साकार हुआ जब 2019 में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में अनुच्छेद 370 और 35ए को निरस्त किया गया. यह कदम केवल एक संवैधानिक सुधार नहीं था, बल्कि यह भारत की एकता और अखंडता को मजबूत करने का ऐतिहासिक संकल्प था. इस निर्णय के पीछे डॉ. मुखर्जी के राष्ट्रवाद की विचारधारा स्पष्ट रूप से झलकती है.

डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने भारतीय राजनीति में एक स्पष्ट और सशक्त राष्ट्रीय विचारधारा प्रस्तुत की. जब पंडित जवाहरलाल नेहरू के नेतृत्व में वैचारिक प्रतिबद्धताएँ राष्ट्रहित से टकराने लगीं, तब उन्होंने मंत्रिमंडल से त्यागपत्र दे दिया. यह केवल पद का त्याग नहीं था, बल्कि राष्ट्रहित के लिए एक साहसिक और कर्तव्य निष्ठ कदम था. इसके बाद उन्होंने भारतीय जनसंघ की स्थापना की, जो भविष्य में भारतीय जनता पार्टी के रूप में विकसित होकर देश की सबसे बड़ी राजनीतिक शक्ति बनी. डॉ. मुखर्जी का सबसे बड़ा संघर्ष जम्मू-कश्मीर की %परमिट प्रणाली% के खिलाफ था. यह व्यवस्था कश्मीर में भारतीय नागरिकों की स्वतंत्र आवाजाही को सीमित करती थी, जिससे भारत के अंदरूनी हिस्सों को एक-दूसरे से जोड़ना मुश्किल हो रहा था. 1953 में डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने जम्मू-कश्मीर की यात्रा करने का साहस दिखाया, जिसके पश्चात उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया. श्रीनगर की जेल में रहस्यमय परिस्थितियों में उनकी मृत्यु 23 जून 1953 को हुई. अत्यंत पीड़ादायक है कि न उन्हें समुचित चिकित्सा व्यवस्था प्रदान की गई और न ही उनकी मौत की निष्पक्ष जांच की गई. उनकी माता श्रीमती योगमाया देवी ने इसे 'मेडिकल मर्डर' करार दिया, पर सत्ता तंत्र मौन रहा. डॉ. मुखर्जी का यह बलिदान व्यर्थ नहीं गया. उनके निधन के कुछ सप्ताहों के भीतर ही कश्मीर की परमिट प्रणाली समाप्त कर दी गई और धीरे-धीरे वह व्यवस्था बदली, जिसने देश के भीतर अलगाव और तनाव पैदा किया था. हालांकि कांग्रेस सरकारों ने दशकों तक उनकी चेतावनियों को नजरअंदाज किया, परन्तु उनकी विचारधारा आज भी भारतीय राष्ट्रवाद का आधार है.

2004 के बाद जब देश में कांग्रेस की सत्ता रही, तब जम्मू-कश्मीर को विशेष स्वायत्तता देने की बातें पुन: उठी. पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह ने 2010 में जम्मू-कश्मीर की स्वायत्तता की बात कहकर भारत की जनता के हितों के साथ खिलवाड़ किया. कांग्रेस ने पीडीपी की कठपुतली बनकर आतंकवादियों के प्रति नरमी बरती, जिससे कश्मीर में दशकों तक हिंसा और विस्थापन हुआ. हजारों नागरिक शरणार्थी बने और उनकी जिंदगी कठिन हुई. इस दौरान अलगाववादी शक्तियों को बढ़ावा मिला और भारत विरोधी गतिविधियां फलने-फूलने लगीं. इसके विपरीत, प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने 2014 के बाद जम्मू-कश्मीर से आतंकवाद और अलगाववाद को दफन कर देश की एकता को मजबूत किया. डॉ. मुखर्जी के संघर्ष और बलिदान के कारण ही जम्मू-कश्मीर आज भारत का अभिन्न हिस्सा है.

> डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी भारत के महान राष्ट्रवादी नेता थे, जिनका जीवन देशभक्ति और समर्पण की मिसाल है. वे पद, प्रतिष्ठा या स्वार्थ से ऊपर उठकर केवल देश की सेवा में लगे रहे. डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी का जीवन हमें सिखाता है कि सच्चा राष्ट्रवाद केवल सत्ता प्राप्ति का साधन नहीं, बल्कि सिद्धांतों और न्याय के लिए निरंतर संघर्ष है. आज जब भारत 2047 में स्वावलंबी और विकसित राष्ट्र बनने की दिशा में अग्रसर है, तब उनकी शिक्षाएं और भी प्रासंगिक हो जाती हैं. डॉ. मुखर्जी का आदर्श और बलिदान हमारे लिए एक अमर प्रेरणा हैं, जो आने वाली पीढ़ियों को एकजुट, मजबूत और आत्मनिर्भर भारत बनाने के लिए प्रेरित करते रहेंगे.

-लेखक भारतीय जनता पार्टी मध्य प्रदेश के अध्यक्ष व बैतूल विधायक हैं.

संघ की गुरु पूजन और गुरु दक्षिणा की अनूठी भारतीय परंपरा

प्रो. विवेकानंद तिवारी
अध्यक्ष, आम्बेडकरपीठ
एचपीयू, शिमला

गुरु पूर्णिमा आध्यात्मिक पथ पर हमारा मार्गदर्शन करने में गुरु की अमूल्य भूमिका का स्मरण कराता है. श्री कृष्ण भगवान ने गीता मे कहा है

आचार्यम् माम् विजानीयात्

गुरु को मेरा ही स्वरूप समझो.यह शिक्षा धरती पर भगवान के दिव्य प्रतिनिधि के रूप में गुरु की महत्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित करती है. वेद व्यास जी भारतवर्ष के साथ उन्होंने सम्पूर्ण मानव जाति का मार्गदर्शन किया. भगवान वेदव्यास जगत् गुरु हैं. इसीलिए कहा है- **व्यासो नारायणम् स्वयं**- इस दृष्टि से गुरुपूर्णिमा को व्यास पूर्णिमा भी कहा गया है.

प्राचीन भारत की सदियों पुरानी गुरु-शिष्य परंपरा को आगे बढ़ाना. प्राचीन भारत में छात्र संतों के आश्रमों में रहते थे और अपनी शिक्षा और प्रशिक्षण पूरा करने के बाद गुरु के प्रति सम्मान के रूप में दक्षिणा देते थे . हिंदू परंपरा में, भेंट का मूल्य मायने नहीं रखता था, बल्कि जो मायने रखता था वह था दक्षिणा के प्रति कृतज्ञता का भाव. गुरु जो भी भेंट करते थे, उसे समान संतुष्टि के साथ स्वीकार करते थे.

इस पवित्र परंपरा को आधुनिक समय में आरएसएस ने अपनी शाखा में पुनर्जीवित किया , जो इसकी स्थापना के समय से ही चली आ रही है और आज भी निभाई जाती है. राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने अपने गुरु स्थान पर भगवाध्वज को स्थापित किया है. भगवाध्वज त्याग, समर्पण का प्रतीक है. स्वयं जलते हुए सारे विश्व को प्रकाश देने वाले सूर्य के रंग का प्रतीक है. संपूर्ण जीवों के शाश्वत सुख के लिए समर्पण करने वाले साधु, संत भगवा वस्त्र ही पहनते हैं, इसलिए भगवा, केसरिया त्याग का प्रतीक है. अपने राष्ट्र जीवन के, मानव जीवन के इतिहास का साक्षी यह ध्वज है. यह शाश्वत है, अनंत है, चिरंतन है.

संघ तत्व पूजा करता है, व्यक्ति पूजा नहीं. व्यक्ति शाश्वत नहीं, समाज शाश्वत है. संपूर्ण हिन्दू समाज को

राष्ट्रीयता के आधार पर, मातृभूमि के आधार पर संगठित करने का कार्य राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ कर रहा है. इस नाते किसी व्यक्ति को गुरुस्थान पर न रखते हुए भगवाध्वज को ही गुरु माना है.

इस पर्व के माध्यम से स्वयंसेवकों को याद दिलाया जाता है कि संघ में व्यक्ति का नहीं विचार का महत्व है, इसीलिए किसी व्यक्ति को गुरु न मानकर संघ ने भगवा ध्वज को गुरू माना है. भगवा ध्वज को गुरु मानने का कारण यह है कि यह भारत की प्राचीन सांस्कृतिक परंपरा का अभिन्न अंग रहा है जिसमें इसे त्याग, बलिदान व शौर्य का प्रतीक माना गया है

प.पू. डॉ. हेडगेवार जी ने फिर से संपूर्ण समाज में, प्रत्येक व्यक्ति में समर्पण भाव जगाने के लिए, गुरुपूजा की, भगवाध्वज की पूजा का परंपरा प्रारंभ की.

भगवाध्वज की पूजा यानी गुरुपूजा यानी-त्याग, समर्पण जैसे गुणों को अपने जीवन में उतारते हुए समाज की सेवा करना है. संघ के संस्थापक डॉ. हेडगेवार जी ने स्वयं अपने जीवन को अपने समाज की सेवा में अर्पित किया था. भगवा ध्वज भारत की सनातन संस्कृति का प्रतीक है. इसी प्रतीक में भारत की समूची ऋषि-परम्परा छिपी है. यही कारण है कि इस उत्सव के माध्यम से स्वयंसेवक देश की प्राचीन संस्कृति की अमूल्य धरोहर से जुड़ते हैं और भारतीय संस्कारों पर गर्व करते हैं. संघ में गुरु पूर्णिमा को श्री गुरु दक्षिणा के रूप में भी मनाया जाता है. संघ की शाखाओं में गुरुपूजा यानी भगवाध्वज की पूजा स्वयंसेवक करते हैं. अपने तन-मन-धन का धर्म मार्ग से विकास करते हुए, विकसित व्यक्तित्व को समाज सेवा में समर्पित करने का संकल्प लेते हुए, संकल्प को आगे बढ़ाते हुए, जीवन भर व्रतधारी होकर जीने के लिए हर वर्ष भगवाध्वज की पूजा करते हैं.

यह दान नहीं, उपकार नहीं, यह अपना परम कर्तव्य है. समर्पण में ही अपने जीवन की सार्थकता है, यही भावना है. परिवार के लिए काम करना गलत नहीं है, परंतु केवल परिवार के लिए ही काम करना गलत है. यह अपनी संस्कृति नहीं है. परिवार के लिए जितनी श्रद्धा से कठोर परिश्रम करते हैं, उसी श्रद्धा से, वैसी कर्तव्य भावना से समाज के लिए काम करना ही समर्पण है.

समर्पण भाव से ही सारे समाज में एकात्म भाव भी बढ़ जाएगा. इस भावना से ही लाखों स्वयंसेवक अपने समाज के विकास के लिए, हजारों सेवा प्रकल्प चलाते हैं. यह सर्वविदित तथ्य है कि संघ किसी बाहरी व्यक्ति से किसी प्रकार की धनराशि या आर्थिक सहायता नहीं स्वीकार करता. संघ के किसी भी व्यय के लिए धन-राशि जुटाने का काम उसके स्वयंसेवक ही करते हैं. स्वयंसेवक अपने अर्जित धन में से ही कुछ अंश संघ के लिए समर्पित करें उनके इस समर्पण से उनका अहंकार न बढ़े अपितु समर्पण भाव और अधिक निस्वार्थ, निश्छल तथा कामनारहित बने, इस संस्कार के लिए संघ ने एक नई रीति निकाली है. स्वयंसेवक जो भी धनराशि अपने गुरु भगवाध्वज के समक्ष अर्पित करते हैं, उसकी घोषणा नहीं की जाती. वह दक्षिणा गुप्त रहती है. इसके लिए व्यवस्था यह की जाती है कि सभी स्वयंसेवक एक बंद लिफाफे में अपनी धनराशि ध्वज के समक्ष अर्पित करते हैं. उस लिफाफे में शून्य से लेकर असीम तक कितनी भी धनराशि हो सकती है. किंतु सभी स्वयंसेवक एक पंक्ति में बैठकर बारी-बारी से आते हैं और भगवाध्वज के समक्ष समर्पण करते हैं.

श्री गुरु-दक्षिणा के माध्यम से स्वयंसेवकों को यह भी याद कराया जाता है कि व्यक्ति को गुरु का स्थान नहीं दिया जा सकता क्योंकि व्यक्ति अंतिम सत्य नहीं है. हम जिस भारतीयता और हिंदुत्व के पथ के राही हैं, उसके एक नहीं अनेक रूप, पंथ और सम्प्रदाय हैं. उन सबका कोई एक निर्विवाद और समेकित मार्गदर्शक हो सकता है, तो वह है भगवा ध्वज. इसलिए त्याग, वैराग्य और ज्ञान की परम्परा का प्रतीक भगवा ध्वज ही हमारे लिए गुरु है.